Knowledge Consortium of Gujarat
Department of Higher Education - Government of Gujarat
Journal of Social Science - ISSN : 2279-0241

Continuous issue-26 | April – May 2017

सन. १८५७ के स्वतंत्रता संग्राममे हजरत महल का योगदान

भारतीय संस्कृति में जहां एक और देवताओं की आराधना की गई है वहां देवियों की भी वन्दना की गई है | भगवान शिव ने समाज में शांति और सुव्यवस्था कायम करने के लिए त्रिपुर राक्षस का विनास किया, तो दुर्गा ने घोर संग्राम में परम तेजस्वी शक्तिशाली महिषासुर का संहार कर के देवताओं का कल्याण किया था | हमारे यहाँ जहां गौतम, कणाद, महर्षि वशिष्ठ, वाल्मीकि, गर्ग, भृगु, भारद्वाज के नाम बड़े आदर के साथ लिए जाते है | वहीं गार्गी, मैत्रयी, सीता, सावित्री, अनसुइया, अरुंधती, लोपामुद्रा के नाम भी बड़े सम्मान के साथ याद किए जाते है | मतलब यह की हमारे देश में आरंभ से महिलाओं को उच्च स्थान प्राप्त हुआ है, जो उनकी, त्याग, बलिदान एवं समर्पण के आभारी है | भारत के इतिहास में इसे ही राजा हो गए की जिनके नाम की पीछे अपनी माँ का नाम आता हे, जैसे की गौतमी पुत्र साताकरनी | कुच्छ ऐसाही भारत के स्वाधीनता संग्राम के बारे में भी हुआ है |

सन. १८५७ के स्वातंत्र्य संग्राम में जहां बहादुर शाह, नाना साहब पेशवा, तात्या टोपे, कुंअर सिंह आदी ने अपना योगदान दिया है वहां झांसी की रानी लक्ष्मी बाई, बेगम हजरत महाल, झलकारा देवी, रानी इश्वरी कुमारी, अवन्तिका बाई लोधी, आदी ने भी बहोत वीरता से अंग्रेज शासन का सामना किया था | प्रस्तुत शोध निबंध में १८५७ ई. के स्वातंत्र्य संग्राममे महीला के तोर पे हजरत महल ने जो योगदान दिया हे उसका विवरण करने का प्रयास किया हे|

बेगम हजरत महल :

बेगम हजरत महाल भी १८५७ ई. | के स्वातंत्र्य संग्राम की महान महिला थी | वेसे हमें उसकी वंश आदी की कोई प्रामाणिक जानकारी प्राप्त नहीं हे | एक अंग्रेज इतिहासकारने उसे एक नर्तकी बताया हे| वही नर्तकी अपने सौन्दर्य और गुण के कारण अवध के नवाब वाजीदअली शाह की आठ बेगमो में एक हो गई |

वाजीदअली शाह का राज्याभिषेक स.न. १८४७ में हुआ था | हजरत महाल का नाम वाजीदअली ने 'महक परी' रखा था|[1] अवध का प्रदेश समृद्ध था पर अवधका नवाब वाजीदअली शाह विलासी, कवी हृदय और रंगीन मजाजी होनेसे अंग्रेजो को शासन अपने हाथमे लेने में सफल रहे थे[2] | अंग्रेज गवर्नर जनरल डेलहौजी नवाब के विलासीतापूर्ण जीवन से परिचीत था | उसने तुरन्त ही अवध की रियासत हड़पने के लिए योजना बना ली | एक पत्र लेकर कंपनी का दूत नबाब के पास पंहुचा और हस्ताक्षर करने को कहा | हस्ताक्षर करने से अवध पर कंपनी का अधिकार प्रस्थापित हो जाता था | ईस लिए वाजीदअली ने हस्ताक्षर नहीं किया | फलस्वरूप डलहौजी वाजीद अली को शासन करने के लिये अयोग्य बताकर स.न.१८५६ में कोलकाता में नजरबंध कीया और फैजाबाद के मोलवी अहमदशाह को पकड़कर फांसी की सजा सुनाई | लोगो में रोस फ़ैल गया और सब लोग लखनऊ में एकत्रित हो कर फैजाबाद के मैलावी को जेल से मुक्त कराके सेना का सुकान उनके हाथ में रख दीया |

अब वाजीदअली शाह के पुत्र को ११ शाल की उम्र में लखनउ में अवध के तख़्त पर बैठाया गया| राज्य का कारभार उसकी माँ हजरत महाल देखती थी क्युकी शासक अभी नाबालिग था| ७ जुलाइ १८५७ में अवध का शासन हजरत महल के हाथ में आया |[२] बेगम हजरत महाल एक योग्य प्रशासिका सिद्ध हुई | उसने हिन्दू मुस्लीम सबको समभाव से देखा | मुक्ति सेना के लिए राज्य का खजाना खोल दीया | अपने सिपाहीओ का होसला बढाने के लिये वो युद्ध मैदान में भी चली गई | यह अंग्रेजो को मिलते ही लखनऊ रेसीडेंसी को अंग्रेजोने घेर ली | बेगम हजरत महल ने खुद हाथी पर बेठ कर समग्र युद्ध का संचालन कीया |

२५ सितम्बर को जनरल आउटरम और हेवालोक की फौजों ने रेजीडेंसी पर अधिकार कर लिया | पर अभी भी लखनऊ का अधिकांश भाग बेगम के आधीन था | उस सहासी महिलाने सेना को जोनपुर और आजमगढ पर धावा बोलदेने का आदेश जारी किया | फिर भी क्रांतिकारीओ में उत्साह की कमी थी | सरदार आपस मे टकरा रहे थे | उसने २२ सितम्बर १८५७ में सामंतों को बुलाया और कहा “शक्तिशाली दिल्ली से हमें बहोत बड़ी आशाए थी | उस नगर से प्राप्त समाचारों से मेंरे दिलमें खुसी के उमंगें दोड़ती थी | लेकीन अब बादशाह का तख्ता उलटगया है और उसकी फ़ौज तीतर-बीतर हो गई है | अंग्रेजोने शीखो और राजाओ को खरीद लिया है | और यातायात के सबंध तूट गए हे | नाना की पराजय हो गई हे | लखनऊ खतरेमें है | अब क्या किया जाये ? हमारी सारी फ़ौज इस समय लखनऊमें है | किन्तु सिपाहीयो के होंसले पस्त हो गए है | वे आलम बाग़ पर धावा क्यों नहीं बोल देते, क्या वे अंग्रेजो को मजबूत बनाने की और लखनऊ के घेरे जाने की राह देख रहे है ? निकम्मा बेठने के लिए और में कीतने दिनों तक सिपाहीयो की तनख्वाह देती रहूंगी ? मुझे अभी जवाब दो | यदि तुम लोग लड़ना नहीं चाहते, तो अपनी जान बचाने के लिए अंग्रेजो के साथ सुलह कर लूंगी”[३] | तब सरदारों का जवाब था हम लड़ेंगे

|

१८५८ के मार्च महीने में कालिन कैम्पवेल और आउटमर की सेना के साथ क्रांतिकारीयो का लखनऊमें घमासान युद्ध हुआ | जो ६ से १५ मार्च तक चला | २१ मार्च को लखनऊ अंग्रेजो को आधीन हो गया[४] | अंत में बेगम की कोठी पर भी अंग्रेजोने कब्ज़ा करा लिया | लखनऊ के पतन के बाद भी बेगम के पास विश्वशनीय सैनिक और उसका पुत्र विराजिस कादिर थे | जब रानी विक्टोरिया ने १८५८ में घोसणा की उसका विरोध हजरत महालने किया था और उसकी खामीयो से लोगो को परिचीत कराया था| जीवनके अंतिम वर्षोमे वो नेपाल के काठमांडू ‘बर्फबाग’ नामका एक छोटा सा महल बनाया था | कुच्छ समय के बाद बेगेमे योग्य लाइफ जीने की दलील पेश की पर उस को मान्य नहीं कीया | किन्तु मासिक ५०० रुपीये का दरामाया मान्य रखा[५] |

बेगम दुःख और हीनता से कमजोर होती गई और अप्रील १८७९ में खुद बनाई होई मस्जीद में सदा के लिये सो गई, पर उसकी वीरता और बलिदान को लोग आज भी याद करते है| बिरजीसकद्र ने अपना दर्द बया करने के लिये मुग़ल सहेनसाह बहादुरशाह जफ़र की तरह कविता का शरण लिया | अपनी प्रातापी माता के लिये अपनी व्यथा एक शेर में बया की हे |

बुलबुल जो हूँ हर एक गुले यास्मीन से दूर,
बिरजीस हूँ मगर जुट इ जोहराजबी से दूर,
मिट्टी खराब हो गई नेपालमे तेरी,
रहता हे क्यों मझरे इमांमे मुंबी से दूर[६]

संदर्भ

I. जोशी अंशु, ऐ मेरे वतन के लोगो, कोठारी प्रकाशन, अहमदाबाद, १९९८, पृ.३४९

II. महेता यशवंत, वैध गार्गी, आझादी आन्दोलन की वीरांगनाए, गुर्जर ग्रंथरत्न कार्यालय, १९९७, पृ.३१

III. मिश्र भरत, १८५७ की क्रान्ति और उसके प्रमुख क्रान्तिकारी, राधा पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, १९९२, पृ.६८

IV. वही, पृ. ६९

V. वही, पृ. ७०

VI. महेता यशवंत, वैध गार्गी, आझादी आन्दोलन की वीरांगनाए, गुर्जर ग्रंथरत्न कार्यालय, १९९७, पृ.४८.

****

Dr. Vipul L. Kanagara
Assistant Professor
Department of History
M. P. Shah Arts & Science College,
Surendranagar

Copyright © 2012 – 2017 KCG. All Rights Reserved. | Powered By: Knowledge Consortium of Gujarat